ॐ

प्रकाशक :
कामेश्वर नाथ तिवारी
रोड नं.-10, राजीव नगर, पटना - 800 024

!! श्री गणेशाय नमः !!
!! ॐ नमः शिवाय !!

।। शिव चालीसा ।।

दोहा – हिम के रूप अमित प्रकाशा।
शिव किये सारे जीव में वासा।।

1. कैलाश के वासी।
महादेव उदासी।।

2. जटा जूट सिर गंगा।
भाल शोभे चन्द्रमा, भस्म अंगा।।

3. बाबा के त्रिनेत्र।
गण उनके भूत प्रेत।।

4. अंग विभूति सोहे।
गले मुण्डमाला मोहे।।

5. विश्वनाथ डमरू बजावे।
तीनलोक के कष्ट भगावे।।

6. कर त्रिसूल, वसह असवारी।
पंचमुख भेष भोले भण्डारी।।

7. जगत के नाथ शिव।
भजते जिनको हर जीव।।

8. हर–हर, बमबम भोले।
हृदय ग्रंथी को खोले।।

9. पार्वती संग आप विराजे।
कल्याण हेतु रूप उपराजे।।

10. दियो आशीष रावण को।
रक्षक बने असुर लवण को।।

11. भील रूप धरी।
अर्जुन मान मरी।।

12. मिले आशिष अपने जन को।
ध्याये जे शुद्ध मन को।।

13. आपके पूजा बिन।
पावे न सुख छीण।।

14. भांग धतूर खाते।
राम ध्यान लगाते।।

15. द्वादस लिंग बीच।
अमृत धार, सिंच।।

16. अंग में विच्छु नाग।
पहने रूद्राक्ष बनाते भाग।।

17. औघड़ लागे उमा के पति।
देवे सबको सद्गति।।

18. महा मृत्यंजय मंत्र तुम्हारा।
बढ़ावे जीवन के धारा।।

19. कामेश्वर शरण गहे।
जन्म–जन्म चरण में रहे।।

20. तेज की मूर्ति अर्न्तयामी
महिमा क्या जाने कामी।।

21. लोटा गंगा जल जो बनारास चढ़ावे।
कामेश्वर विश्वनाथ कष्ट तत्काल मिटावे।।

22. रामेश्वर जो गंगे ले जावे।
पूजे शिव मोक्ष पावे।।

23. हे भूत नाथ दया कीजे।
मेरो माथे हाथ दिजे।।

24. ब्रह्मा विष्णु प्रकट किन्हो।
मारूत बन राम सुख दिन्हों।।

25. बेल के पाती चंदन।
मंदार पुष्प अभिनंदन।।

26. भक्ति औढर दानी को भावे।
ताको आशा पूरन करावे।।

27. बालक वृद्ध जवान।
शिवलिंग छु हुआ महान।।

28. नरक के योनि कटे।
पाप के पहाड़ फटे।।

29. भोग चढ़ावे पेड़ा मेवा।
करे करावे भोले नाथ के सेवा।।

30. कहत कामेश्वर बने राजा।
जो मंदिर द्वार बजावे 'भेरी' बाजा।।

31. प्रदोश द्वियी पक्ष वाचे।
धन सुत पावे साचे।।

32. फाल्गुन कृष्ण शिवरात्री।
विदित सकल रंग नाथ की बाराती।।

33. आप हो प्रभु ओंकारा।
कामेश्वर आशा के सहारा।

34. जे पढ़े नित पूरे इच्छा।
ताके शिव न ले परीक्षा।।

35. बंश बढ़े, भक्ति चढ़े।
कोमल हृदय अविकार मढ़े।।

36. महा संकट विच दो चौपाई।
होवे रक्षक चंद्रशेखर सहाई।।

37. शंभू शरण बीच कामेश्वर अनाथ।
ताप मिटाओ पशुपति नाथ।।

38. हे रूद्र के दाता।
आप जगत पिता माता।।

39. जे पढ़े नीत ग्यारह वार।
करे करावे लिंग के श्रृंगार।।

40. मांगे कामेश्वर पूरण करना काम।
आपका मंगल महेश्वर नाम।।

दोहा – शिव बिन काम ना नसाही।
ताके शास्त्र संत गवाही।।
पंचाक्षर जपत कोटि नाम।
पावत कामेश्वर शिव के धाम।।

आरती

औढ़र दानी शिव की आरती किजै।
पति भवानी की आरती किजै।।
शशि ललाट, सुंदर शिश गंगा।
गले मुंड माल विछु शोहे भुजंगा।।
कार्तिक गणेश पिता का नाम शुभ लीजे।।।
औढ़र दानी.....

गरल पान करी, सृष्टि बचायो।।
योगी भक्त को गले लगायो।
दुख दुर करन, पदोदक पीजे।।।
औढ़र दानी.....

अमित रूप मेरो महादेव के।
पायो वरदान, जन नित जल चढ़ायो के।।
कामेश्वर हिमरूप सबको रिझे।।।
औढ़र दानी.....

शिव महिमा

समुद्र मंथन बीच पीये हाला।
मेरो गौरी पति सबते निराला।।

परमेश्वर के अलौकिक लीला।
इनकी पूजा होवे बीच सीला।।

इनके कार्तिक, गणेश पुत्र।
जो है अभ्युदय के सूत्र।।

काशी है इनकी राजधानी।
मुक्तेश्वर की अजब कहानी।।

तारकेश्वर रामेश्वर उमेश्वर।
शिवा के कान्त और कामेश्वर।।

पंच नाम पंच मुख शिव के।
पंच तत्व को जगावे जीव के।।

करूँ प्रणाम तुम्हें त्रिपुरारी।
खोलो प्रभु अज्ञान किवाड़ी।।

सत्-सत् नमन करता दास कामेश्वर।
करना कृपा मुझपर हे ईश्वर।।

मणि फणि प्रणव तुम्हीं हो नाथ।
भक्त के माथे रखिए हाथ।।

क्षमा माँगू मैं कर जोरे।
विनती सुनिए दीनानाथ मोरे।।

महिमा क्या लिखे कामेश्वर।
एक तो कलि दूजे तन नश्वर।।

❋❋❋

!! पाठ करने का तरीका !!

शिव चालीसा शुक्ल पक्ष के पंचमी तिथि से या सोमवार से शुरू करें। इससे मन को शांति मिलेगी। दुःख दरिद्रय मिटेगा। आयु बढेगी। विद्या, विवाह, मुकदमा में लाभ होगा। और स्वप्न में शिव का दर्शन होगा। लेकिन शात्विक आहार से पाठ करने पर ऐसा लेखक का विश्वास है।

❋❋❋